Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
April 2024 5(4), 744–750

STUDY OF THE IMPACT OF FAMILY ENVIRONMENT OF HIGH SCHOOL LEVEL STUDENTS ON THEIR EDUCATIONAL INTEREST AND EDUCATIONAL ADJUSTMENT CAPACITY

हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनके शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक समायोजन क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन

Beena Shukla [1], Prof. Dr. Sangeeta Shroff [2]

[1] Research Scholar
[2] Professor, MATS School of Education MATS University, Raipur Chhattisgarh

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i4.2024.2630

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: It is difficult to find the exact meaning of education. School education is considered education, while somewhere the process from birth to death is considered education. Generally, the process of learning is also considered education. Education is not just me teaching and you accepting, but it is a process of development that goes on in both the teacher and the student. Education brings about a change in the behavior of a person, the theoretical basis of education is based on philosophy and philosophy is related to life, the way of living is called philosophy. Determination of objectives would be impossible without resorting to philosophy. Education is purposeful and various philosophies determine its objectives. Education is life in itself, hence life is also education, it contains interaction or interaction. While constantly struggling with the environment, he learned to live.

Hindi: शिक्षा का सटीक अर्थ लगा पाना कठिन है। विद्यालयीन शिक्षा को ही शिक्षा माना जाता है तो कहीं जन्म से लेकर मृत्यु तक चलने वाली प्रक्रिया को शिक्षा माना गया है। सामान्यतः सीखने की प्रक्रिया को भी शिक्षा माना गया है। शिक्षा केवल मेरे द्वारा पढ़ाना और आपके द्वारा ग्रहण करना नहीं है बल्कि यह विकास कि प्रक्रिया है जो शिक्षक और शिष्य दोनों में चलती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन आता है, शिक्षा का सैद्धांतिक आधार दर्शन पर आधारित है और दर्शन का संबंध जीवन से है, जीवन यापन के ढंग को दर्शन कहते हैं। दर्शन का अवलंबन लिए बिना उद्देश्यों का निर्धारण असंभव होगा। शिक्षा सोद्देश्य होती है तथा विभिन्न दर्शन उनके उद्देश्यों का निर्धारण करते हैं। शिक्षा स्वयं मे जीवन है अतः जीवन भी शिक्षा है, इसमें अंत क्रिया या पारस्परिक क्रिया निहित है। वातावरण से निरंतर संघर्ष करते हुए उसने जीना सीखा।

Keywords: High School Level, Family Environment, Educational Interest, Educational Adjustment Ability, हाईस्कूल स्तर, पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक रूचि, शैक्षिक समायोजन क्षमता

1. प्रस्तावना

शिक्षा के माध्यम से ही बालक की अंतःक्रिया को बाहर लाया जाता है। जीवन के प्रारंभ से बालक में सीखने की प्रक्रिया होती है। मानव एक जिज्ञासु प्राणी है, वह कुछ न कुछ नया जानना चाहता है। यह सब हमें शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त होता है।

सच तो यह है कि शिक्षा से इतने लाभ है कि उसका वर्णन करना कठिन है। यह कहना उचित होगा कि शिक्षा माता के समान पालन-पोषण करती है, पिता के समान उचित मार्गदर्शन करवाती है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा समाज के अन्य व्यक्तियों की सापेक्ष अपना व्यवहार प्रदर्शित करता है, दूसरों को प्रभावित करता है तथा स्वयं भी प्रभावित होता है। मनुष्य के व्यवहार मे उसके परिवार के वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यार्थियों को उनकी शैक्षिक रूचि के अनुसार ही अध्ययन करवाना आवश्यक होता है, जिससे उनका समुचित विकास हो सके और विद्यार्थी सभी के साथ विद्यालय में समायोजन कर सके।

आज की शिक्षा छात्रों को योग्य नागरिक बनाने के लिए उन्हें मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है, इससे उन्हें यह समझने में सहायता प्राप्त होगी। वह प्रजातंत्र में रहते हैं तथा भारत के प्रत्येक नागरिक को समान अवसर उपलब्ध है तथा उन्हें अपने कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों का ठीक प्रकार से पालन करना है। भारत में विद्यार्थियों को उनकी रूचित के अनुसार मार्गदर्शन आवश्यक है।

2. पारिवारिक वातावरण

बालक व्यक्तित्व के विकास में परिवार का महत्वहहपूर्ण योगदान रहता है। प्रायः बालक के अन्दर गुणों अथवा दुर्गुणों के संस्कार परिवार के वातावरण में ही पड़ता है। सच बोलना, चोरी करना, उदार करना इत्यादि जीवन में अपनाने वाली बातों तथा झूठ बोलना, आलस्य, स्वार्थवृत्ति आदि दुर्गुणों की पीछे परिवार की ही पृष्ठभूमि होती है, एक प्रकार से सीखने की प्रक्रिया बालक की प्रक्रिया पर आश्रित होती है।

अधिकांश बालक शुरू के छः या सात वर्षो को सामान्य परिवार में ही रहकर व्यतीत करते इस काल में अध्यापक उस पर माता-पिता का काफी प्रभाव पड़ता है। यद्यपि परिवार के अन्य लोगों का भी बालक व्यक्तित्व-सृजन कार्य में महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

समाज को परिवार से कुछ दायित्व की अपेक्षा रहती है। उदाहरण के लिए परिवार से सभी की अपेक्षा रहती है कि पति-पत्नी कुटुंब के अन्य सदस्यों को हानि पंहुचाये बिना आरामपूर्वक जीवन-यापन करें और साथ ही बच्चों के लालन-पालन हेतु अच्छी व्यवस्था बनाने का प्रयत्न करें।

परिवार के व्यक्ति किन्ही न कि किन्हीं सूत्रों में बंधें होने के कारण परस्पर एक-दूसरे के प्रति उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हैं, ये नैतिक सूत्र परिवार के सभी लोगों को अन्यान्याश्रित बना देते हैं, जिसके कारण प्रत्येक एक-दूसरे के प्रति प्रमादि संवेगात्मक भावनाओं से परिपूर्ण होते हैं।

‘‘परिवार से हम संबंधों की वह व्यवस्था समझते हैं, जो माता-पिता और उसकी संतानों के बीच में पायी जाती है।‘‘

3. शैक्षिक रूचि

रूचि वह प्रेरणादायक शक्ति है जो हमें किसी व्यक्ति, वस्तु या क्रिया के प्रति ध्यान देने के लिए प्रेरणा देती है।

शैक्षिक रूचि में निरंतर मौखिक शिक्षण और अत्याधिक पुरावृत्ति, पाठ को नीरस बना देती है। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों का प्रयोग, निरीक्षण आदि के अवसर देकर कार्य में उनकी रूचि उत्पन्न करें। बालकों को खेल और रचनात्मक कार्यों में विशेष रूचि होती है। अतः बालकों के विकास के लिए खेल विधि का प्रयोग करना चाहिए। बालकों से विभिन्न प्रकार की वस्तुएं बनवाना चाहिए। शिक्षा ग्रहण करते समय विद्यार्थियों में विभिन्न वस्तुओं, पक्षियों, मशीनों इत्यादि में रूचि उत्पन्न हो जाती है। शिक्षक को उन्हें भ्रमण के लिए ले जाकर उनकी रूचियों को और विकसित करना चाहिए।

शिक्षा में रूचि का होना अत्यधिक आवश्यक है विद्यार्थियों की रूचियों में आयु के साथ-साथ परिवर्तन होता रहता है। रूचि का मुख्य आधार उनकी जिज्ञासा होती है। मान एक जिज्ञासु प्राणी में आता है। जन्म से लकर मृत्यु तक मानव में जिज्ञासा रहती है, उसी जिज्ञासा से उसमें रूचि उत्पन्न होती है। विद्यार्थियों को किसी विषय के शिक्षण में तभी रूचि आती है, जब इनको इस बात का ज्ञान हो जाता है उस विषय का उनमें और भी गहरा संबंध देखने को मिलता है।

4. समायोजन क्षमता

समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकता और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है। शैक्षिक समायोजन अनवरत् चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित संबंध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।

समायोजन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित संबंध रखने के लिए अपने आहार में परिवर्तन करता है या समायोजन व्यक्ति अपनी क्षमता-योग्यता के अनुसार करता है। समायोजन साथ ही व्यक्ति परिस्थिति तथा पर्यावरण के मध्य अपने को समायोजित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता हे। अतः समायोजन को संतुलित दशा कहा गया है। ऐसे अनेक कारक या उपाय है जो बालक के स्वास्थ्य को बनाए रखने अस्वस्थ न होने देने और उनके विकास करने में सहायता दे सकते हैं। इस प्रकार यह कारक ना केवल बालक की समायोजन से रक्षा कर सकते हैं वरन् उसकी समायोजन की क्षमता में वृद्धि भी कर सकते है।

मनोविज्ञान में परस्पर विरोधी आवश्यकताओं को संतुलित करने की व्यवहार संबंधी प्रक्रिया को समायोजन कहते हैं।

5. संबंधित शोध का अध्ययन

1. सुलेखा (2011) ने ''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य का उनके अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' किया।

निष्कर्ष - इन्होंने माध्यमिक स्कूल के 200 विद्यार्थियों की रूप से सम्मानित किया और पाया कि विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य का उनके अधिगम पर सार्थक प्रभाव पडता है।

2. मुर्रे एंड सैडविस्ट (1990) ने ''बच्चों के माता-पिता की अनुपस्थिति और बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा पर अध्ययन'' किया।

निष्कर्ष - इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि वे बच्चें जो केवल अपने माता-पिता दोनों के साथ रहते हैं, उन बच्चों की तुलना में कम है।

3. मिश्रा रंजना (1993) ने ''उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक रूचियों का अध्ययन'' किया।

निष्कर्ष - निष्कर्ष पर पाया कि कृषि, वाणिज्य, मानविकी विज्ञान एवं तकनीकि विज्ञान में छात्र-छात्राओं की रूचियां समान थी जबकि फाइन आटर्‌्स तथा गृह विज्ञान में छात्राओं की रूचियां छात्रों की अपेक्षा अधिक थी।

4. ए.स्टुवर्ट (1997) ने ''मानसिक स्वास्थ्य तथा समायोजन के संबंध में परीक्षणों व अनुभव के आधार पर बताया कि मानसिक स्वास्थ्य तथा समयोजन के बीच बहुत अधिक सह-संबंध'' पाया है।

6. समस्या कथन

''हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक समायोजन क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन''

7. अध्ययन का उद्देश्य

1) शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में संचालित हाईस्कूल के विद्यार्थियों का मिलने वाले पारिवारिक वातावरण की तुलना करना।
2) शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में संचालित हाईस्कूल के विद्यार्थियों का शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3) शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में संचालित हाईस्कूल के विद्यार्थियों के शैक्षिक समयोजन का तुलनात्मक आंकलन करना।

8. अध्ययन की परिकल्पना

H_{01} शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में संचालित हाईस्कूल के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण सार्थक रूप से भिन्न नहीं पाया जायेगा।

H_{02} शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में संचालित हाईस्कूल के विद्यार्थियों के शैक्षिक रूचि में सार्थक भिन्नता नहीं पाई जाएगी।

H_{03} शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में संचालित हाईस्कूल के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक भिन्नता नहीं पाई जाएगी।

9. प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र एवं परिसीमाएं

प्रस्तुत शोध अध्ययन में रायपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय शालाओं के विद्यार्थियों का चयन किया गया।

न्यादर्श - कक्षा 9वीं के 600 विद्यार्थियों का चयनकिया जावेगा।

अध्ययन विधि - प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग करके न्यादर्श का चयन किया गया। जिसमें रायपुर जिले के हाई स्कूल विद्यालय में से 600 छात्र-छात्राओं का चयन करके सर्वेक्षण विधि से आकड़ो का संकलन किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यार्श चयन प्रक्रिया - रायपुर जिले के शासकीय और अशासकीय ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों में 600 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया।

10.सांख्यिकीय अभिप्रयोग

इस शोध कार्य का उद्देश्य हाईस्कूल के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक रूचि तथा शैक्षिक समायोजन पर होने वाले प्रभाव को ज्ञात करना है।

11.प्रदत्तों के संकलन की प्रक्रिया

विभिन्न मापनियों पर प्रतिक्रियाओं को मूल्यांकित करने के बाद डाटा को एक्सेल शीट पर फीड किया गया तत्पश्चात् सांख्यिकी के प्रयोग से परिकल्पनाओं की सत्यता की जांच की गयी।

शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के आयामों तथा शैक्षिक समायोजन के बीच पियरसन सहसंबंध गुणांक

चर	शैक्षिक समायोजन
सामंजस्य (Cohesion	r = -.212, p<.01
अभिव्यक्ति (Expressiveness)	r = -.198, p<.01
संघर्ष (Conflict)	r = -.329, p<.01
स्वातंत्र (Indipendence)	r = -.175, p<.01
उपलब्धि अभिविन्यास (Achievement Orientation)	r = -.156, p<.01
बौद्धिक सांस्कृतिक अभिविन्यास (Intellectual Cultural Orientation)	r = -.158, p<.01
सक्रिय मनोरंजक अभिविन्यास (Active Orientation)	r = -.195, p<.01
नैतिक धार्मिक प्रमुखता (Moral religious Emphasis)	r = -.142, p<.01
संगठन (Organization)	r = -.217, p<.01
नियंत्रण (Control)	r = -.042, p<.05

r (df=298) at .05 level 0.09 and 0.14 at 0.01 level

शैक्षिक समायोजन स्केल के स्कोरिंग पैटर्न के अनुसार अंकों के बढ़ने पर शैक्षिक समायोजन भी कम हाता जाता है।

परिकल्पना क्रमांक H01 हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा। इस परिकल्पना का Independent Sample '+' Test से विश्लेषित किया गया।

शहरी-ग्रामीण क्षेत्र में स्थित हाईस्कूल के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण की तुलना –

चर	शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी ¼N=300½		ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी ¼N=300½		Mean Diff.	'+'
	Mean	S.E.	Mean	S.E.		
सामंजस्य	18.46	0.477	15.46	0.474	3.00	4.45
अभिव्यक्ति	18.06	0.439	16.64	0.477	1.42	2.36
संघर्ष	16.25	0.467	18.76	0.470	2.50	3.76
स्वातन्त्र	19.48	0.503	18.14	0.517	1.34	1.86
उपलब्धि अभिविन्यास	18.41	0.522	17.05	0.424	1.36	2.02
बौद्धिक सांस्कृतिक अभिविन्यास	19.48	0.516	16.27	0.458	3.21	4.65
सक्रिय मनोरंजक अभिविन्यास	16.24	0.430	14.15	0.381	2.09	3.64
नैतिक धार्मिक प्रमुखता	16.22	0.462	14.02	0.479	2.19	3.29
संगठन	16.58	0.432	17.08	0.417	0.50	0.84
नियंत्रण	16.96	0.402	16.10	0.474	0.86	1.38

'+' (df=598) at .05 level 1.96 and 2.59 at 0.01 level.

1. तालिका के अनुसार शहरी-ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के समूह के पारिवारिक वातावरण के आयामों सामंजस्य, अभिव्यक्ति संघर्ष, उपलब्धि अभिविन्यास, बौद्धिक सांस्कृतिक अभिविन्यास, सक्रिय मनोरंजक अभिविन्यास तथा नैतिक धार्मिक प्रमुखता पर सार्थक भिन्नता पायी गयी परन्तु

स्वातंत्र, संगठन तथा नियंत्रण आयामों पर दोनों समूहों के बीच भिन्नता नहीं थी। अतः परिकल्पना क्रमांक 01 हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र का विद्यार्थियों पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा। आंशिक रूप से अस्वीकार की जाती है।

2. परिकल्पना क्रमांक भ्02 हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शैक्षिक समायोजन क्षमता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा, इस परिकल्पना को Independent Sample '+' Test से विश्लेषित किया गया।

शहरी-ग्रामीण क्षेत्र में स्थित हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि की तुलना –

चर	शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी Z (N=300)		ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी (N=300)		Mean Diff.	'+'
	Mean	S.E.	Mean	S.E.		
शैक्षिक रूचि	7.24	3.90	6.64	3.91	0.60	1.90

'+' (df=598) at 0.05 level 1.96 and 2.59 at 0.01 level.

तालिका के अनुसार शहरी क्षेत्र (Mean=7.24) तथा ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों (Mean=6.24) की शैक्षिक रूचि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी गयी यद्यपि शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों से अधिक थी पर '+'=1.90 सांख्यिकीय रुप से सिद्ध नही था।

परिणाम के अनुसार शहरी तथा ग्रामीण हाईस्कूलों के विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि मे सार्थक भिन्नता नहीं पायी गयी। अतः परिकल्पना H02 हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शैक्षिक रुचि का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया, स्वीकार की जाती है।

12.निष्कर्ष

1) हाईस्कूल के विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण उनके शैक्षिक समायोजन को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।
2) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि को प्रभावित नहीं करती है।
3) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक समायोजन को प्रभावित नहीं करती है।

13.सुझाव

स्कूल प्रशासन के लिए सुझाव -

1) पारिवारिक समर्थन का संवाद- प्रशासन को विद्यार्थियों के परिवारो के साथ संवाद बनाए रखना चाहिए यह संवाद विद्यार्थियों की रुचियों और पारिवारिक समर्थन को समझने में मद्द करेगा।
2) विद्यार्थी की आवश्यकताओं को समझना - प्रशासन को विद्यार्थियों के पारिवारिक माहौल को समझना चाहिए जैसे उसकी आर्थिक स्थिति परिवार की समय सामाग्री और विद्यार्थी की स्थिति पर।
3) विद्यार्थी के उच्च स्तर के शैक्षिक लक्ष्यों का समर्थन- प्रशासन को उन विद्यार्थियों के लक्ष्यों का समर्थन करना चाहिए जो उच्च शैक्षिक स्तर पर पहुचने के लिए प्ररित है।

इन सुझावों के माध्यम से स्कूल प्रशासन विद्यार्थियों के पारिवारिक महौल को समझ कर उनकी शैक्षिक रुचि को समर्थित कर सकता है।

14.अभिभावकों के लिए सुझाव

1) विद्यार्थी की रुचियों को समझने अभिभावकों को विद्यार्थी की रुचियों को समझने का प्रयास करना चाहिए इसके लिए विद्यार्थी के साथ बातचीत करना चाहिए और उनकी प्राथमिकताओं को जानना चाहिए।
2) संचार कों मजबूत करे - अभिभावकों को विद्यार्थी के स्कूल में होनें वाली प्रगति या कैरियर के बारे में समय-समय पर संचार करना चाहिए। इससे उनहे विद्यार्थी की रुचि और प्रगति को समझने में मद्द मिलेगी।
3) स्कूल के साथ संबंध बनाए - अभिभावको को स्कूल के साथ एक मजबूत संबंध बनाये रखना चाहिए इससे वे विद्यार्थी के शैक्षिक और सामाजिक प्रगति को समझ सकते हैं और उनके समर्थन में सक्षम हो सकते है।

15.शिक्षको के लिए

1) शिक्षको को समझे - शिक्षको के साथ विभिन्न क्षेेत्रो मे बातचीत करे और उनकी प्राथमिकता को समझे।
2) समर्थन प्रदान करें - शिक्षको को उनकी शैक्षिक रुचि को सम्मान दे और उनके अध्ययन में विभिन्न गतिविधियों और कोर्सो में सहभागिता करने में मद्द कर सकतें है।
3) संवाद बनांए - शिक्षको के साथ संवाद बनाए रखे और उनहे अपने शैक्षिक और कैरियर लक्ष्यों के बारे में समय-समय पर बातचीत करें।

16.विद्यार्थियों के लिए

हाईस्कूल के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावण का उनकी शैक्षिक रुचि पर विद्यार्थियों के सुझाव-

1) सहयोग और समर्थन - पारिवारिक सदस्यों को विद्यार्थियों के संमर्थन के सक्रिय भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।
2) समय का प्रबंधन - पारिवाकि सदस्यों को विद्यार्थियों के अध्ययन समय और कार्यक्षेत्र को समय सारणी बनाने में सहायता करने के लिए आमंत्रित करें।
3) प्रेरणा और प्रतिस्पर्धा का समर्थन - पारिवारिक सदस्यों को विद्यार्थियों के उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने और उनहे प्रेरित करनें के लिए सहायता करें।

17.शैक्षणिक अनुप्रयोग

हाईस्कूल के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक रुचि पर शिक्षा में उपयोग कुछ निम्नलिखित हो सकता है।

1) बालक शिक्षा विद्यालय से ग्रहण करता है। विद्यालय का मुख्य उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना होता है। बालक के विकास में परिवार के वातावरण का विशेष प्रभाव रहता है।
2) समर्थन और प्रोत्साहन- पारिवारिक सदस्यों को विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि को समर्थन और प्रोत्साहन करना चाहिए वे उनहे उनके द्वारा चुने गये विषयों और कैरियर मार्ग में सहायता कर सकते है।
3) संवाद का महत्व- पारिवारिक सदस्यों को विद्यार्थियों के साथ संवाद को महत्वपूर्ण मानना चाहिए वे उनही रुचियों और लक्ष्यों को समझने के लिए उनके साथ बातचीत कर सकते है।
4) आवश्यक संसाधनो की उपलब्धता - पारिवारिक सदस्यों को विद्यार्थियों की उनकी शैक्षिक रुचियों को पहचानना चाहिए और उनहे वह संसाधन उपलब्ध करवाने चाहिए जैसे- पुस्तके कम्प्यूटर और अन्य संसाधन।
5) सकारात्मक प्रतिक्रिया - परिवार के सदस्यों को विद्यार्थियों की सफलता पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देनी चाहिए जो उनहे और भी प्रेरित करेगी और उनकी शैक्षिक रुचि को बढावा देगी।
6) समर्थन नेटवर्क- पारिवारिक सदस्यों को विद्यार्थियों के लिए समर्थन नेटवर्क का होना चाहिए जो उनहे शैक्षिक सलाह और मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।

बालक कच्ची मिट्टी के बने होते हैं उनहे सही दिशा में ज्ञान देना आवश्यक होता है आज के बालक कल के भावी नागरिक बनाते है शिक्षा माघ्यम से उनके ज्ञान का विकास कर सकते ह।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Gupta S.P. (2007) Higher Educational Psychology, Sharda Pustak Bhawan, Allahabad.
Pathak S.P. (2011), Educational Psychology, Agra Agrawal Publication.
Educational Psychology, Agra Agra Pg. 530.
Singh, Dr. Arun Kumar Educational Psychology, Motilal Banarasi Das, Varanasi.
Sarin and Sarin (2007) Educational Research Methods, Vinod Pustak Mandir, Agra-2.
Singh Dr. Ram Pal, Educational Research and Statistics, Vinod Pustak Mandir, Agra.
Tyagi G.S.D., (2005) Principles of Education, Vinod Pustak Mandir, Agra.